एवरशाइन

मानक
हिंदी व्याकरण

अशोक लव
एम. ए. (हिंदी), बी. एड. (दिल्ली विश्व.)
पी. एच. डी. (मानद) डी. लिट्. (मानद)
साहित्यालंकार, साहित्यश्री, साहित्य मनीषी

4

एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्यक्रम और नई शिक्षा नीतियों के अनुसार

सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन

ISBN : 81-7816-021-8

प्रकाशक : एवरशाइन पब्लिशर्ज़

SONI HOUSE, WZ-348, Nangal Raya, New Delhi-110046
Phone : 28111758, 28113958, Fax : 28112353
Mobile No. : 9560408043, 9868877950
E-Mail : evershinepub@gmail.com

भूमिका

व्याकरण भाषा के शुद्ध प्रयोग का ज्ञान कराता है। भाषा के मौखिक और लिखित रूपों का ज्ञान व्याकरण द्वारा होता है। हिंदी भाषा विश्व की प्रामाणिक वैज्ञानिक भाषा है। इसकी संरचना वैज्ञानिक पद्धति से हुई है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि इसे जिस रूप में लिखा जाता है, इसका उच्चारण भी उसी रूप में किया जाता है। इसलिए इसके व्याकरण के ज्ञान से इसके मौखिक और लिखित दोनों रूपों पर समानाधिकार आ जाता है।

समय तेज़ी से बदल रहा है। इसके साथ-साथ शिक्षा-पद्धतियों में भी तेज़ी से परिवर्तन आ रहा है। संचार माध्यमों के प्रचार-प्रसार और विश्वीकरण का प्रभाव शिक्षा जगत पर भी पड़ा है। भाषा पर इन सबका प्रभाव पड़ रहा है। संसार में वही भाषा जीवित रहती है जिसने विज्ञान और इलैक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों को स्वीकार करके नवीन स्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लिया है। हिंदी इन परिवर्तनों को स्वीकार करके समृद्ध हुई है।

व्याकरण की यह श्रृंखला इन समस्त स्थितियों को समक्ष रखकर तैयार की गई है। इसकी भाषा विद्यालयों के विद्यार्थियों के स्तरानुकूल है। पांडित्य प्रदर्शन हेतु संस्कृत की तत्सम प्रधान शब्दावली से बचा गया है। इस पुस्तक श्रृंखला में विद्यार्थियों को केंद्र में रखा गया है। नियमों-उपनियमों और अभ्यासों की भाषा बोधगम्य है। इसका उद्देश्य है - विद्यार्थी पढ़कर इन्हें स्वयं समझ सकें।

व्याकरण जैसे नियमों-उपनियमों से भरे शास्त्र को शुष्क एवं नीरस माना जाता है। इस श्रृंखला की प्राथमिक स्तर की पुस्तकों (भाग तीन, चार और पाँच) को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक बनाया गया है। विभिन्न नियमों को जीवन के साथ संबद्ध करके समझाया गया है। बाल-गीतों की पंक्तियों और गीतों के माध्यम से व्याकरण पढ़ाने का नया प्रयोग व्याकरण जगत में पहली बार किया गया है। इससे विद्यार्थियों की व्याकरण पढ़ने में रुचि बढ़ी है। अध्यापक-अध्यापिकाओं ने इस प्रयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा के व्याकरण का अध्ययन-अध्यापन सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। इसी स्तर पर विद्यार्थी भाषा सीखना आरंभ करता है। भाषा की नींव इसी समय रखी जाती है। मात्राओं का उचित प्रयोग करने से लेकर अनुच्छेद और कहानी-लेखन कक्षा पाँच तक हो जाता है। इन कक्षाओं में व्याकरण-अध्ययन अत्यंत आवश्यक होता है। इसलिए इस स्तर की पुस्तकों को अध्यापक-अध्यापिकाओं की आवश्यकताओं और विद्यार्थियों की आयु और ग्रहण-क्षमता को समक्ष रखकर तैयार किया गया है।

माध्यमिक स्तर की पुस्तकों की भाषा भी सहज और सरल है। इनके उदाहरण आम जीवन स संबद्ध हैं। ये विद्यार्थियों के परिवेश से सीधे जुड़े हुए हैं। अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में विद्यार्थियों और अध्यापक-अध्यापिकाओं को जो कठिनाई आती है, उसे भी दृष्टिगत रखकर भाग छह, सात आठ को तैयार किया गया है। अभ्यास के लिए पर्याप्त प्रश्न दिए गए हैं।प्रश्नों के साथ ही उत्तरों के लिए पर्याप्त स्थान रखे गए हैं। इसमे विद्यार्थियों को गृह-पुस्तिकाओं में कार्य करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यदि प्रत्येक अध्याय के साथ दिए गए 'प्रश्न और अभ्यास' गंभीरतापूर्वक किए जाएँगे तो विद्यार्थी व्याकरण में पारंगत हो जाएँगे।

साहित्य के क्षेत्र में लगभग तीस वर्षों के निरंतर लेखन एवं अध्यापन के दो दशकों से अधिक के अनुभव के पश्चात व्याकरण-लेखन का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में रुचि जाग्रत हो। वे इसका शुद्ध प्रयोग करें। उनकी अभिव्यक्ति क्षमता विकसित हो। उनकी राष्ट्रभाषा के प्रति सकरात्मक सोच बने। इस श्रृंखला से उनकी हिंदी साहित्य के प्रति रुचि विकसित होगी। आशा है व्याकरण पुस्तक की यह श्रृंखला अध्ययन-अध्यापन के अपने उद्देश्य में सार्थक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक को विभिन्न राज्यों के शिक्षा विभागों, एस.सी.ई.आर.टी, एन.सी.ई.आर.टी और सी.बी.एस.ई. की पाठ्यक्रम नीतियों और पाठ्यक्रमों को दृष्टिगत रखकर तैयार किया गया है। अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए यथास्थान अंग्रेज़ी के पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं।

आशा है हिंदी भाषा के अध्यापक-अध्यापिकाएँ इस पुस्तक-श्रृंखला का अपनी सहायिका के रूप में स्वागत करेंगे। उनके द्वारा ही ज्ञान प्रदान करने का पावन कार्य संपन्न होता है। उनके इस समर्पित, पावन और अतुलनीय कार्य में यह पुस्तक सार्थक भूमिका निभा सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

विद्यार्थियों के साथ-साथ उनके माता-पिता भी इसे रुचिकर एवं उपयोगी पाएँगे। आप सबकी प्रतिक्रिया और सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

अशोक लव

विषय-सूची

क्रम	विषय		पृष्ठसंख्या
1.	भाषा	(Language)	5
2.	वर्ण, शब्द और वर्तनी	(Alphabet, Words and Spellings)	8
3.	संज्ञा	(Noun)	14
4.	लिंग	(Gender)	19
5.	वचन	(Numbers)	25
6.	सर्वनाम	(Pronoun)	29
7.	विशेषण	(Adjective)	34
8.	क्रिया	(Verb)	38
9.	क्रियाविशेषण	(Adverb)	43
10.	संबधबोधक	(Post Position)	46
11.	समुच्चयबोधक (योजक)	(Conjunction)	48
12.	विस्मयादिबोधक	(Interjection)	51
13.	मुहावरे	(Idioms)	54
14.	समानदर्शी पर भिन्न अर्थ वाले शब्द	(Pairs of words-distinguished)	57
15.	विपरीत अर्थ वाले (विलोम) शब्द	(Antonyms)	59
16.	पर्यायवाची	(Synonyms)	61
17.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	(One word Substitution)	63
18.	अनुच्छेद-लेखन (क) मेरे दादा जी (ख) मेरा सपना (ग) मुझे पुरस्कार मिला (घ) आसपास की स्वच्छता	(Paragraph-Writing)	65
19.	पत्र-लेखन	(Letter-Writing)	67
20.	कहानी-लेखन (क) हंस किसका (ख) भलाई का बदला (ग) मूर्खराज	(Story -Writing)	70

1 भाषा (Language)

परीक्षाफल निकलने के पश्चात अनूप और सुगंधा मिले। वे दोनों एक दूसरे के परिणाम के विषय में बातें करने लगे।

अनूप –सुगंधा! मैं अपनी कक्षा में प्रथम आया हूँ। तुम्हारा स्थान कौन–सा है?

सुगंधा –मैं भी अपनी कक्षा में प्रथम आई हूँ। किन्तु हिंदी में मेरे अंक बहुत ही कम आए हैं।

अनूप –वही स्थिति मेरी भी है। वास्तव में हम हिंदी में बहुत कमज़ोर हैं।

सुगंधा –इसके लिए हमें हिंदी व्याकरण को ध्यान से पढ़ना चाहिए। अनूप और सुगंधा ने अपने मन की बात एक दूसरे से **कहकर** बताई।

सत्यम के दादा जी गाँव में रहते हैं। वह हमेशा रेडियो पर प्रसारित होने वाले समाचारों को सुनते हैं। रेडियो **सुनकर** सत्यम के दादा जी देश–विदेश की नई–से–नई जानकारी रखते हैं।

प्रभात ने पत्र **लिखकर** अपने बड़े भाई को जानकारी दी कि वह अपने स्कूल का आदर्श छात्र माना गया है। स्वतंत्रता–दिवस समारोह में प्रधानाचार्य ने इसकी घोषणा की और अपने हाथों से उसे माला पहनाई। प्रभात का पत्र **पढ़कर** उसके बड़े भाई बहुत प्रसन्न हुए।

इस तरह हमने देखा कि अपने विचारों और भावों को प्रकट करने के कई ढंग होते हैं। बोलकर और लिखकर हम अपने मन के विचार प्रकट करते हैं। सुनकर और पढ़कर हम दूसरों के मन की बातों को जानते हैं। यह काम भाषा के माध्यम से होता है।

भाषा के माध्यम से हम अपने विचार और भाव प्रकट करते हैं तथा दूसरों के विचारों और भावों को जानते हैं।

इन चित्रों को ध्यान से देखिए–

ऊपर के चित्रों से पता चलता है कि हम दो तरह से अपनी बात प्रकट करते हैं और दूसरों की बात जान पाते हैं। यह भाषा से संभव होता है। इस तरह से भाषा के दो रूप प्रकट होते हैं – **1. लिखित भाषा 2. मौखिक भाषा।**

1. लिखित भाषा : भाषा के लिखित रूप को हम लिखकर और पढ़कर प्रयोग में लाते हैं। हम लिखकर गृह–कार्य करते हैं और परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर देते हैं। अध्यापक हमारी पुस्तिका को पढ़कर हमें अंक प्रदान करते हैं।

इसके अतिरिक्त हम अपने घरों में पत्र–पत्रिकाओं पुस्तकों और ग्रंथों को पढ़ते हैं। ये सभी भाषा के लिखित रूप हैं।

2. मौखिक भाषा : भाषा के मौखिक रूप द्वारा हम अपने घर–परिवार में, मित्रों के साथ, अपरिचितों से बातचीत करते हैं। बोलकर और सुनकर एक–दूसरे की बातों को जानते हैं।

विश्व में सैंकड़ों भाषाएँ बोली जाती हैं। अलग–अलग देशों में अलग–अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। अरबी, फ़ारसी, जर्मन, अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, चीनी, जापानी, पश्तो, रूसी आदि भाषाएँ विदेशी हैं।

भारत में भी कई भाषाएँ बोली जाती हैं। प्रत्येक प्रांत की अपनी भाषा है। संस्कृत भारत की सबसे पुरानी भाषा है। हिंदी भारत भाषा की राष्ट्रभाषा है। देश में बोली जाने वाली भाषाओं में कश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, तमिल, उड़िया, बांगला, असमिया आदि प्रमुख हैं।

ध्यान दीजिए :-

1. मन के विचारों और भावों को प्रकट करने का माध्यम भाषा है।
2. भाषा के दो रूप होते हैं- लिखित और मौखिक।
3. प्रत्येक देश में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं।
4. हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है।

उत्तर दीजिए :-

1. भाषा द्वारा हम अपने विचारों को कैसे प्रकट करते हैं?
2. भारत की सबसे प्राचीन भाषा कौन सी है?

कीजिए और सीखिए :-

1. **नीचे दिए वाक्यों में जो सही हो उसके आगे सही (✓) का निशान लगाइए और जो गलत हो उसके आगे गलत (×) का निशान लगाइए-**

   (क) हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। ☐

   (ख) भाषा के तीन रूप होते हैं। ☐

   (ग) भारत की सबसे नवीन भाषा संस्कृत है। ☐

   (घ) विश्व में केवल पाँच भाषाएँ बोली जाती हैं। ☐

   (ङ) भारत के प्रत्येक प्रांत की एक ही भाषा है। ☐

   (च) अलग-अलग देशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ☐

2. केरल, गुजरात, हरियाणा, मणिपुर, त्रिपुरा और उड़ीसा में कौन-कौन सी भाषाएँ बोली जाती हैं? अध्यापक से पूछकर लिखिए।

___

___

___